दिनांक :- 13-05-2020

कालेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम : डॉ. फाकिर आज़म (अतिथी शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- छः

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- छठी शताब्दी ईसा पूर्व स्त्रोत

अर्थव्यवस्था - छठी शताब्दी ईसा पूर्व आर्थिक प्रगति के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण युग था। पुरातात्विक दृष्टिकोण से यह युग उत्तरी काली पॉलिशदार मृद्भांड (NBPW) का काल था। इस संस्कृति के अंतर्गत लौह के उपकरण पकाई गई ईंट, सिक्के तथा मण्डलकूपों की उपलब्धता एक नई अर्थव्यवस्था की तरफ संकेत करते थे।

इस काल में कृषि, अर्थव्यवस्था का मूल आधार हो गई।
1000 ईसा पूर्व के आस-पास उत्तर प्रदेश तथा बिहार की जनता
में लौह के प्रयोग की वजह से क्रांतिकारी परिवर्तन हुए।
ज्ञान की रोपाई पद्धति के विकास तथा लौह के उपकरणों
के ज्ञान से कृषि उत्पादन में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया।
चावल उत्पादक मध्य गंगा घाटी में गेहूं उत्पादक ऊपरी गंगा
घाटी की तुलना में अधिक अनाज उत्पादन होता था।
पाणिनी में अष्टाध्यायी और सूत निपात के अनुसार खेत
को दो या तीन बार जुताई होती थी।
सांख्यायन गृह्यसूत्र में बैल द्वारा खेती करने हल चलाने
एवं मंत्रों के साथ समस्त कृषि प्रक्रिया को आगे बढ़ाने
का उल्लेख है।
पाणिनी के अनुसार खेती का सर्वेक्षण करने वाला अधिकारी
क्षेत्रकार नाम से जाना जाता था।
उत्पादन अधिशेष में जनसंख्या वृद्धि संभव हुई। इसके

Scanned with CamScanner

अतिरिक्त उत्पादन को यज्ञ पर खर्च करने की प्रवृति कम हो गई।
इसी काल में सर्वप्रथम खेती तथा वास की भूमि का
पृथक-पृथक वर्गीकरण हुआ। कृषि भूमि के लिये जहां
क्षेत्र शब्द का प्रयोग हुआ है, वही चारागाह के लिए का
या वाप शब्द का प्रयोग मिलता है।
बौधायन के अनुसार छः निवर्तन थी जो डेढ़ एकड़ भूमि के बराबर थी।
प्रारंभिक बौद्ध साहित्यो में खेतपति अथवा वृथपति की
चर्चा है। इनका सामान्य अर्थ है कि अब भूमि के पृथक
पृथक स्वामी थे। बौद्ध ग्रंथो से ज्ञात होता है कि कृषि
कार्य में दासो कर्मकारो तथा परस्सो को भी नियोजित किया
जाने लगा था।
इस समय कृषि तथा पशुपालन के बड़े-बड़े चारागाहों का
भी विकास हुआ। माना जाता है कि 500 हलो से खेती की जाती थी।
पशुओ को चरने की भूमि गोचर या विवात कहलाती थी।

राज्य चारागाहो को जंगली पशुओ से रहित रखने के लिये शिकारियो (लुब्धको) तथा शिकारी कुत्तो (खगणिन) को भी लगाता था।

फसल

सूत्र ग्रंथो मे दो प्रकार के जौ-यव तथा यवानी और पाँच प्रकार के चावल-कृष्ण ब्रिही, महाब्रिही, हायन, यवक तथा पष्टिक का उल्लेख हुआ है।

प्राचीन बौद्ध एवं जैन साहित्य मे चावल (शालि) के प किस्मो की चर्चा मिलती है जैसे रक्त शालि, कल मशालि गंध शालि, महा शाली

भूमिकर उपज के छठें लेकर बारहवे भाग तक हो सकता था इस समय दुर्भिक्ष भी साक्ष्य प्राप्त होते हैं। साहित्य मे तीन प्रकार के दुर्भिक्ष की चर्चा है-चंचु श्वेतास्थि तथा शलाकावृत्ति। अकाल का मुख्य कारण वर्षा के अभाव से कृ का नष्ट होना अथवा परिवहन की सुविधाओ मे कमी होना

मगध क्षेत्र चावल के लिये प्रसिद्ध था।

गृहपति – गृहपति (गहपति) वैदिक युग में याजक (यज्ञ करने वाला) तथा पशुचारक थे किंतु छठी सदी ई० पूर्व में वे पहली बार विशाल पितृसत्तात्मक परिवार के मुखिया बन जाए। उन्हें धन के कारण सम्मान प्राप्त हुआ। गृहपति मेंढक राज्य की सेना को वेतन देता था तथा बुद्ध संघ की सेवा के लिये उसने 1200 गौ सेवकों को नियुक्त किया था। उसी तरह अनाथपिंडक भी सम्पन्न गृहपति था।

शिल्प – इस काल में शिल्पो की एक बड़ी संख्या का उल्लेख मिलता है। राजगृह में 18 प्रकार के शिल्पों का उल्लेख हुआ है। इस काल में शिल्पों का न केवल विशिष्टिकरण हुआ, बल्कि शिल्पों का क्षेत्रीयकरण भी हुआ – जैसे वैशाली के सद्दलपुत्त में कुंभकारो की 500 दुकानें थी। जुलाहों की भी अलग-अलग बस्तियाँ थी।

जुलाहों का वाई तंतुवायध्यान के नाम से जाना जाता था।
हाथीदांत का काम करने वाले दंतकार विधि कहलाते थे और
रंगरेजो का कार्य करने वाला रंगरेजकर विधि कहलाते थे।
इसके अलावा कुछ अन्य व्यवसाय भी थे जिन्हें समाज में पर्याप्त
प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं थी। इसे हिनसिप्प व्यवसाय कहा गया है
जैसे शिकारी. मुहावरे, नाई, नट-नर्तक कसाई इत्यादि।
मुद्रा- इस काल में राज्य की तरफ से किसी प्रकार की मुद्रा
जारी करने का साक्ष्य प्राप्त नहीं होता है।
पाणिनी ने कई प्रकार के सिक्कों का उल्लेख किया है, जैसे
निष्क, शतमान, सुवर्ण, शाण कार्षापण और उसके निचले मूल्य
की का सिक्का जैसे अर्द्ध. पादकाकिणा तथा अर्द्धकाकिणी
इस समय धातु के आहत सिक्कों (पंचमार्क्ड सिक्के) का
प्रचलन था। धातु के आहत सिक्कों का प्रथम प्रयोग 500
BC के आस-पास हुआ। आरंभ में ये आहत सिक्के चाँदी

के बनते थे परंतु बाद में ताँबे के भी बनने लगे। पंचमार्क सिक्कों में धातु के टुकड़ों पर हाथी मछली, साँड़ अर्द्धचंद्र की आकृतियाँ बनाई जाती थी। ये पूर्वी उत्तर प्रदेश -मगध तथा तक्षशिला में विशेष रूप से पाये गए है।

बिम्बिसार तथा अजातशत्रु के काल में राजगृह में पाँच मास एक पाद के बराबर होता था। मास एक ताँबे का सिक्के था

व्यवसायिक संगठन

इस समय बहुत से व्यवसाय संघो या गिल्डो के रूप में संगठित थे जिन्हे बोलचाल में श्रेणियाँ कहा जाता था। बौद्ध जातकों में इस प्रकार की श्रेणियों की परम्परागत संख्या 18 बताई गई है। कुछ महत्वपूर्ण श्रेणियाँ थी।

सौवर्णिक हिरण्यक - सुनार

प्रावारिक - लबादे बनाने अथवा बेचने वाला

गौलिक - शरीर बनाने वाला

कौशिकनिकाय - जुलाहा